

2727 I



श्री॥ श्रीगणेश॥ श्रीगणेश

बावहिल्ले गोस्थापय्यासुहाजन जलधानाभिपदकिशिकुम्भप्रक्षमामिद  
क्रिधाहिमुखं॥ स्वनाकलदयकाताहाकेपुय॥ ॥ जजमानेक्षपेवायाकाया  
अदक्रिधालया-कसपनाखकिनाडा-सूर्ययातक्षग्वलननाअ-खसिसव  
दकलकाय॥ ॥ ॐ हिमिधकिनासमापम्॥ ॐ ॥ ॐ ॥

2727 I



ॐ नमः श्रीवज्रसत्त्वाय ॥ ॥ अथ पिंड क्रिया लिख्यते ॥ ताय पोतास ॥  
धूपाय ॥ ॐ मा ऊंका साइइ धलकसि हामा मधि कंज रंगनाऊ ॥  
रिगनाऊ गयजमसयाता सिसाहल कनाडु नखा कप मारणा थला  
लयर १ धीवा १ गग्रास जाकि कूल १ बजिकूल १ कावकूल १ ॥

३  
प्रापं सूर्यार्घ्याय ॥ ॥ सकुंदास सिद्धलंठिकाडा ऊऊमानयाकनिक  
॥ सिलसीवन्दनं दयात ॥ सकुंदास स्वान विविधनकयाडा ऊऊमान  
या सिलसंकय सिलसिपुष्पं दयात मरिध निवजी निमहाप्रतिसुत्र  
त्रक्र २ मां सर्वसत्त्वानां वंदं रूढस्वाहा ॥ ॥ जाकिडालखडा सकुंदाया  
ऊऊनहायकां ऊऊय ॥ ॥ महादानकाय ॥ ॥ स्वस्ति श्रीगणेशसिंह  
कथागकपर्णाय रुद्रकल्पसहानामलाकथाकोवेवस्वकमेवकथ ॥ सूर्य



2

4



भवनविजयनाथ ॥

॥ धनश्यामाय ॥

॥ दानपत्तियुक्तमानस्य

नपालमधुल ललिताप्रतिमहानगत्रवल्लिरुकास्यपरगडात्यन्तमम  
कनामधेयस्य गृहसकलपत्रिवात्रासायथाभक्तुकरुलसंप्राप्तिका  
मनार्थस्वपिनामृकनामदिवंगरुस्यइर्गतिमावनसङ्गतिरुलसंप्रा  
प्तिकामनार्थमाकृष्टात्रसखावमीरुवनेरुलसंप्राप्तिकामनार्थमस्मि  
दिनरूपकमूलपिधुदानावनकर्मक्रियानिमित्तार्थमाशोथीसूर्यायन

वर्धनमः॥ ऊर्ध्वार्धनमः॥ प्रसृष्टार्धनमः॥ पादोपादार्धनमः॥ लक्ष्मणार्धनमः॥

यक ॥ ॥ वृं के न ॥ श्री सूर्य देवता रुद्रावकाय ॥ देवज्युपनिमं उयोमि ॥

जा किल स्यादार्थमय ॥ श्रीसूर्यदेवताहृद्गणिकायपाशावमनार्थः ॥

॥ सुखिहा ॥ ॥ स्वानवाय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ स्व

मायस्वाहा॥ ॐ नमो भगवते स्वाहा॥ ॐ ब्रह्माय स्वाहा॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥

ॐ शक्राय स्वाहा ॥ ॐ शनिनाय स्वाहा ॥ ॐ गुरुवा स्वाहा ॥ ॐ रुद्रवा स्वाहा ॥

...



हा॥ ॐ ऊत्मनश्चन्द्रवक्ताय वज्रपुष्पं प्रतिक्रियाहा॥ ॥ सिद्धलंकि  
 क॥ श्रीसूर्याय नमः॥ ॥ ऊज्ज्वलाय नमः॥ श्रीसूर्या  
 यत्र कज्जहा प्रवीरकवस्तुनमः॥ ॥ स्नानकाय॥ श्रीसूर्याय नमः॥  
 नकाय नमः॥ ॥ कायहा॥ यधमा हं दुपुर्वा हं दुर्वा  
 तथा गतः॥ हवदक्षवांशानि त्राधुनं वारीमहाश्वयमः॥ ॥ का  
 नमः॥ सूर्याय नमः॥ ऊवाकस्मसं काशं काशं ययमहायेति॥ ॥ केशोत्री

सर्वपापघ्नं प्रसामिदिवाकत्र॥ ॥ थुनिकर्मपायककुलपालना  
 क्रिधकंधायक॥ ॥ ॐ॥ ॥ थनगुनपायकपाय॥ ॥ मय॥ दानपति  
 काय॥ ॥ गुनवं वजाचार्याय हस्तार्चनमः॥ ऊलार्चनमः॥ प्रपुर्वा  
 नमः॥ पादोपायार्चनमः॥ ॥ केशोत्रकनक॥ हस्तार्चनमः॥ मि  
 श्रीगुननाथं प्रसिद्धमः॥ ॥ ॐ॥ ॥ थनपूजाहस्तसंकल्पयोगः॥ ॥ ना  
 वाय॥ नारूपूजाहस्ताय नमः॥ ॥ थियकाडाकय॥ ॥ ॐ नमो हरा



[illegible]

हिरु. न्नादिनादिग्रहनाजवोनादकाग्रि. विषगमुपनवक इहिंकादि  
नानाहयहवधननकदं हजन्मनिसुखसंयदि. पत्रययमा क्रगति  
संश्रुफिकामनार्थ. मन्नुनासंयकं वाधिहोनरुलं संश्रुफिकामनार्थ  
चरुत्थर्मराकूलसंज्ञानसंयदि स्थिरकामनार्थ. स्वपिना. म्मकनामदि  
वगत्तस्य इगं फिमाचनसकृदिरुलसंश्रुफिकामनार्थ. माक्रदानसखाव  
निरुवनरुलसंश्रुफिकामर्थ. म्मस्मिंदिन. श्रियक्रमलपिधुदतार्थन



कर्मक्रियानिमित्तार्थः००० दं कमधुलपुष्पागुसंकल्पयामि ॥ ॥  
 धनगुप्तमधुलदनक ॥ ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसत्वाय ॥ ॥  
 धनरुथिलसः कावलाकयाउः कृगनस्वचाकलउयक ॥ सं ॥ ॐ नमः  
 सर्वदुर्गक्रियविराधनजाजायः कथागनायाहं न संम्यक् वदाम ॥ नमः  
 था ॥ ॐ नमः श्रीविराधनः सर्वपापविराधनस्वाहा ॥ ॥ का  
 वलापाकायकाउः पूर्वसावकं नमः ॥ वाक्याय ॥ नीलाश्विनिमिर्द्धि

च कुलानवकुलानां मधुना नागिका वाह । क्रीडादाय्येषा दत्तं ॥ द  
धिवक्त्रिजानूत्याः कायनरुक्मपादया ॥ अनांशो सर्वगात्राय जायत वाः  
धिवीर्यवान् अनाम्युजकगणानि मधुसर्पिर्हितरथा ॥ दधिवधुयना  
का अक्षरपिधुसंरुवा ॥ ॥ यिधुदानं महं कनिष्ठाया कज्जमान  
॥ ॥ थनकावना संकल्पयाक ॥ ॥ अथ ॥ दानयत्तिकाय ॥ अ  
स्मिं दिनं यिधुदानार्चनं कर्म क्रियानि मिथुर्थं ॥ दंजलकृगमीलसंक



ह्यंसिद्धिजमु॥ ॥ धनपिधुजायक॥ ॥ पिधुहागकायकः कृगन  
कुं धर्मथाहुपिधुहागंस्वधा॥ ॥ अपिनांमहयथा नान्ननपिधुहागंस्वधा॥ ॥ २  
पिनांमहयथा नान्ननपिधुहागंस्वधा॥ ॥ स्वपितायथानान्ननपिधुहागं  
स्वधा॥ ॥ विकलायपिधुहागंस्वधा॥ ॥ न ॥ ॥ पिधुकायस्यमासगहस  
थनः हामननहाय॥ ॥ सतिलायस्वधा ३ ॥ ॥ लाहाकवायक॥ ॥  
५ पिधुअयस्यमासगहस्वधा ५ ॥ ॥ सेयः ॥ गाथासः मरुयाक॥ ॥ कृ

१५  
भासनहय॥ ॥ वाक्क॥ दानपिकाय॥ ॥ वाक्क॥ ॥ यथाकृतथागतायाः पूर्वग  
मध्यः स्वयन्निपात्रिताः दक्षिणाहिमूर्खपिधुयीत्वाः विपश्चिनाः दवतायाः शि  
विनाविश्वरुसुथाः १ कुकुकन्दप्रसन्नायाः दवतायाः महाबलाः कनकाश्रस्य  
दधडाः १ श्रीमरुकाश्रयस्य वः प्रसन्नाभाक् सिंहस्यः वः श्रद्धाप्रिददध्वनाः  
१ कः दवप्रमूखानां मिदमासः समाश्रिताः ॥ नृपधर्मथाहुवागीश्वरुहात्र  
कायः १ कृगसनम्पतिवृताः कृगवमुंमूपतिवृताः ॥ ॥ यवः ॥ गाथासः



१६ दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६० ॥

वेष्मन न दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६१ ॥

वेष्मन न दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६२ ॥

वेष्मन न दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६३ ॥

१७ पडपा ड सखाहा ॥ ६४ ॥ वेष्मन न दवता रुद्रा न काय कृष्ण सनमपतिष्ठतां कृगवमुं मयतिष्ठतां ॥ ६५ ॥

काय ॥ ६६ ॥ पूर्वगधिसलवर्ण्यायां वनहिः सफनिष्ठस्यः सफपुन

धसः यष्मता विधानार्थः कास्ययगा डस्यः ऊजमाननं अस्मत्तथायक

अस्मत्तऊजमानस्यः उक्तं धुला सतिलाः समथू सद्यतः सद्युः सुवीय

कनसहिनायः यदि सद्यपयकामिः सहनार्थः न धुलपयकामिः अ



# जनका

यं धर्मं धनुवा गगनं सैयं सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ नय ॥ गगनं सतय ॥  
 पंचगमा नादवकार हाव काय सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ ॥ ॥ सत  
 नय ॥ वेधन नदवकार हाव काय सृष्टि विरुवज स्वाहा ॥ ॥ ॥  
 लखनं स्नानया क ॥ जलंगलं सकलं सति ॥ गज नकस्य महा सक  
 स्य तलंगलं रुवहुन यवमाहिधक ॥ ॥ साइइ न स्नानया क ॥ ल

स्व२

श्रीधनका वनारुं डेला वनाथ वज्र पद्म नु तलंगलं रुवहुन यव  
 माहिधक ॥ ॥ ॥ यं नमस्तन स्नानया क ॥ सुतिलाय सदधि समधूः  
 सपत्न सखु सर्वायक वसुहिनाय स्वाहा ॥ ॥ सांरुगुद्रमकं क  
 न ॥ प्रतिविम्बसमाधर्मा आख्या शुद्धा हिला विला ॥ अनया काया व  
 हनुकर्म समूहव ॥ ॥ जाकिलं खजानका वेधुथियकं नय ॥ ॐ



नमो ह्यगवतः वेनावनप्ररुक्कुवाजाय तथा गताया हेतुसंयक्तं वृद्धाय  
॥ नमो ॥ ॐ शुभा २ सम २ भा २ दान २ अनालं च नलं च जगतावति  
महातज्ज नितालं च निलाकूलं निर्वासा सर्ववृद्ध विज्ञानाधिष्ठितं  
स्वाहा ॥ ॥ वेत्ता २ गात्रा २ स मर्यादा दार्ढ्यं ॥ ह्यगवती मरु  
ती २ स्वयं युधर्मभा कुवासाय वः पंचरात्रमाता वेत्ता नवदं वनाहता

कायपाशा नमना र्घ्यप्रतिष्ठाहा ॥ ॥ स्नानवाय ॥ वेत्ता ॥ ॐ  
आर्यवेना वनाय स्वाहा ॥ ॐ अक्रात्याय स्वाहा ॥ ॐ वत्सं रुवाय स्वा  
हा ॥ ॐ अमिताहाय स्वाहा ॥ ॐ अमाय सिद्धिाय स्वाहा ॥ ॐ लावनाय  
स्वाहा ॥ ॐ मामकीय स्वाहा ॥ ॐ पाठुलाय स्वाहा ॥ ॐ नावाय स्वाहा ॥  
॥ ॥ गात्रा २ सया ॥ ॐ नन्दाय स्वाहा ॥ ॐ रुद्राय स्वाहा ॥ ॐ ऊषाय



स्वाहा॥ॐ शोभाय स्वाहा॥ॐ कपिलाय स्वाहा॥ पंचगामा रुक्मवज्र  
पृथ्वीति स्वाहा॥ ॥ मरुता ॥ॐ वैश्वानराय स्वाहा॥ॐ मानि  
रुद्राय स्वाहा॥ॐ पूर्वरुद्राय स्वाहा॥ॐ धनराय स्वाहा॥ॐ वैश्वरूपाय  
वज्रपृथ्वीति स्वाहा॥ ॥ सिद्धलंकि ॥ वन्दनं वन्दनानि वन्दनं  
नमिता पूजां भयसमूहसूत्रं समय स्वाहा॥ ॥ ऊजं कां का स्वाय कं

॥ वसुकी नरानपा नमिता पूजां भयसमूहसूत्रं वन्दनं समय स्वाहा॥ ॥  
स्वानुदाय॥ मानिमा धविजाति मांदा वचं चयकादिहि॥ हे मरुता ह  
नपृथ्वीमा लिका॥ ॥ शोभजि स्वाहा॥ दक्षिणी वने वयदा नपा न  
मिता पूजां भयसमूहसूत्रं वन्दनं समय स्वाहा॥ ॥ सिद्धलंकाय॥  
दुल्लल्लमधुसूत्रा दा दिव दिह्ला दय कर्कशी वरुना नम उता निरु



*propheta*

2727 I



कुं नमः



पुनः पुनः

2727 I



लक्ष्म्ययः॥ ॥धूप॥ ॐ धर्मरथूपध्यानपात्रमितापुत्रोमघसमूड  
सूत्रनसमयस्वाहा॥ ॥ॐ हलरहालरदीयदानपात्रमिता॥ पूजा  
मघसमूडसूत्रनसमयस्वाहा॥ ॥नायश्रुत॥ ॐ श्रुतवाजका  
यउपायपात्रमिता॥ पूजा मघसमूडसूत्रनसमयस्वाहा॥ ॥श्री  
जयाय॥ नमस्तु पंचवृक्षानां श्रुताद्यादिकूलं वयं॥ मध्वेश्वरं तनाथं

पंचवृक्षं नमस्तु॥ ॥प्रसिद्धिश्चमहालक्ष्मी सर्वसंप्रतिदायकं॥ न  
दाहडाऊयासोम्या कपिलायनमास्तु॥ ॥वृक्षं संविजनिजाकं वे  
प्रवर्धमहा हलं॥ वैष्णवमहं वंदे सर्वसंप्रतिदायकं॥ ॥धर्मव  
कु॥ ॐ मूनरमहामूनः सुखावन्मनूगकुंडुस्वहा॥ ॥सकल्य॥  
यथादिमानरुलश्रुतसकल्यसिद्धिस्तु॥ ॥कमलेश्वरुसितंलाह







लंखन्या किला दकविय ॥ उपितां महयथाना म्रन जलकूग किला द  
कार्य स्वध ॥ पितां महयथाना म्रन जलकूग किला दकार्य स्वध ॥ स्वपि  
तायथाना म्रन जलकूग किला दकार्य स्वध ॥ ॥ सा इ इ विय ॥ उं  
कं क नि २ ना च नि २ आ च नि २ मा च नि २ प्र ति ह न क य क नि य स्वध ॥ ॥  
य ना न क विय ॥ सहि ना य सम ध स द धि स घ न स खं शु स र्गो प क न द

सहि ना य स्वध ॥ ॥ लंख विय ॥ उं चं स्त २ महा प्र स्त म्र प नि मि न  
पं स्त म्र प नि मि ना य पं स्तः हान सं हा ना य वि न उं सर्व सं स्का व प नि  
शु द्ध धर्म न गग न समू ह न स्व हा व वि शु द्ध महा न य पं नि वा न स्वध ॥  
सिं ध न ॥ च न नं च न ना ति व ल पा न मि ता पू जां म घ स मू ड स न न स म  
य स्वध ॥ ॥ ऊं ऊं का ॥ व लु क्री व दान पा न मि ता ॥ पू जां म घ स मू ड



सुवनं समयस्वभा॥ ॥ तंगनाऊ हिंगनाऊ ॥ तंगनाऊ हिंगनाऊ य  
य कृष्ण पूजां भयः समुद्र सुवनं समयस्वभा॥ ॥ धनिनाकाय ॥  
दक्षिणी नने वयदानपात्रमिता पूजां भय समुद्र सुवनं समयस्वभा॥  
रुलरुलकाय ॥ रुललरुलमधु पूजाः दादिं वजिरुला दय कर्कती चत  
तानगपुनानिरुलकाय ॥ ॥ धय ॥ धर्म रधयभा नपात्रमिता पू

जां भय समुद्र सुवनं समयस्वभा॥ ॥ दीय ॥ उं कलर कालय रदी  
यदानपात्रमिता पूजां भय समुद्र सुवनं समयस्वभा॥ ॥ नायम  
कल ॥ श्रुत नाऊ काय उपाय पात्रमिता ॥ पूजां भय समुद्र सुवनं स  
मयस्वभा॥ ॥ नाय ॥ नमस्तुभ्यं सिंहाय धर्म चक्र उवर्द्धन ॥  
उभा पुके जगत्सर्व ॥ धय सर्व इर्गति ॥ ॥ विधुं सर्व संकल्प ॥



रावा हावविवर्जितं ॥ आत्मसिंहनमस्कृत्य ४७ वप्रकृतिनिर्मलं ॥ ॥  
धर्मवक्त्र ॥ ॐ मून २ महामून सखा वन्ना मे नू गच्छु स्वधा ॥ ॥ सं  
कल्प ॥ यथादिमानरुल अन्नसंकल्पसिद्धि वम् ॥ ॥ सिंहा  
लया यजाय ॥ स्वर्ग ला कषा फु वम् सज्जति ला कषा फि वम् ॥ ॥  
धनं लिपि युयात कृ गगन रुय ॥ वाक् ॥ दानयति काय ॥ ॥ य

थाततथा गताया पूर्वगमध ॥ ॥ उपिनां महयथानाश्चनकृग  
गनमूपतिष्ठतां कृगवम्मुमूपतिष्ठतां ॥ पिनां महयथानाश्चनकृ  
गगनमूपतिष्ठतां कृगवम्मुमूपतिष्ठतां ॥ स्वपिनायथानाश्चनकृग  
गनमूपतिष्ठतां कृगवम्मुमूपतिष्ठतां ॥ विकल्पियुयात कृगगनम  
पतिष्ठतां कृगवम्मुमूपतिष्ठतां ॥ ॥ धूलालयगतय ॥ ॥ वसं







[illegible]

कंक॥ वसुक्तीनदानपानमिनापूजांभयसमृद्धनृपसमयस्वभा॥ ॥  
 नंगनाङ्गिङ्गनाङ्ग॥ नंगनाङ्गिङ्गनाङ्गपूष्यकपूष्यपूजांभयसमृद्धन  
 दासमयस्वभा॥ ॥२५॥ वज्रि॥ दधिक्रीननेवयदानपानमिनापूजा  
 भयसमृद्धनृपसमयस्वभा॥ ॥२६॥ दूत॥ दूततेशामधूष  
 ना॥ ॥२७॥ धर्म॥ धर्मश्चयधन॥ ॥२८॥ दीप॥ दीपश्चकालय॥  
 दीप॥ ॥२९॥ ज्ञान॥ ज्ञानश्चहृदय॥ ॥३०॥ नमः॥ नमस्तुभ्योसिंहायध







पिधुं स्वानादिस्वानपिधुं विकलायनस्मेपिधुं स्वधा ॥ **पृथक् स्वधा ॥** ॥ मि  
लादकविद्य ॥ विकल्पपिधुयः कलकृगः किलादकार्घ्यस्वधा ॥ ॥ साइइ ॥  
कंकनिश्वावनीश् ॥ ॥ **पंचमः ॥** सतिलायसदधिसमथ ॥ ॥  
लख ॥ **पृथक् ॥** महापृथक् ॥ ॥ **मिंदव ॥** चन्दनचन्दानिवलपाव ॥ ॥  
**ऊंका ॥** वसुक्तीनदान ॥ ॥ **कंगवाऊहिंगवा ॥** कंगवाऊहिंगवाऊ  
षकपृथक् ॥ ॥ **रवीवजि ॥** दधिक्रीनदानपावमिना ॥ ॥ **रुत**

**रुत ॥** रुतलंगमधूषूणा ॥ ॥ **धूप ॥** धर्मधूपध्यानपाव ॥ ॥  
दीप ॥ **कल ॥** कालयदीप ॥ ॥ **नाय ॥** यधर्मा ॥ ॥ **नाय ॥** जिफा  
नमुमहावावाः रुफावेननीनदी ॥ रुफायामनसंववात्तवूढं पुरामाम्यहं  
॥ ॥ **नीलयानिर्यक** ॥ **धर्मवज ॥** मूनरमहा ॥ ॥ **लकल्प ॥** यथदिमा  
न ॥ ॥ **सिताहल** ॥ **यथाय ॥** स्वर्गलोकाय ॥ ॥ **धनहिं**



प्रजापाद॥ लाहकवाय॥ ॥ धालमधुलथियक॥ धांकात्रसर्वविघ्नाका  
ववजहमि. सनख २ सर्वतथागतागतानां नृधितिवंकुक्कस्वाहा॥ ॥ धा  
नासनवाय॥ सुपिगधअस्वाहा॥ ॥ आससिक्कलंति॥ चन्दनम  
लयार्हंतंकम्बुनिकुक्कमात्रीकाभीलयघनसावव. प्रतिगृह्यथस्व॥  
यलस्वा. उहस्वा. स्यानदकाकाय॥ यमोदकपूष्यनमः नीलादकपूष्यनमः  
: चयंकपूष्यनमः नानासुगंधजातिपूष्यनमः॥ ॥ कायकिययाक॥

जायांवायकाय॥ दधित्रीनदानयात्रमितापूजांमघसमूडरुनधंसमयस्व  
धा॥ ॥ खं. दा. ला. काय॥ मत्स्यमांस. श्रुज्जदानयात्रमितापूजांमघसमू  
डरुनधंसमयस्वधा॥ ॥ थ. जय. ला. काय॥ ॐ नमः २ नमः प्रवधियं  
॥ ॥ आगवा. काय॥ सकलपिरुपिरुगराणांमन्त्र. षट्जस. जन्त्रनेवयरा  
ऊनादिसंप्रक्षेपयाम्यह॥ ॥ लेखविय॥ ॐ श्रीरथदकनावमनप्रतिकुस्वधा  
॥ ॥ ग्वय. ग्व. काय॥ सकलपिरुगराणांमन्त्र. पूगतावलादिसंप्रक्षेपयाम्य



हं॥ कर्पूरममदिव्य॥ सकलपिङ्गुगणस्य कर्पूरदीपसंप्रक्षेपयाम्यहं॥ ॥थ  
 नकं गलनकं॥ ॥गुणपूजा दक्षिण निसलाकाय॥ ॥वाहिविद्य॥ वाक॥  
 गावका सर्वसत्त्वावा मन्दजावा नृपिमावा मन्त्रपिमावा संगिनावा मन्त्रसंगिनावा  
 भवसंगिनावा नासंगिनावा सर्वसत्त्वावामनूगकुरुस्वधा॥ कायमाहाक  
 पूयक॥ कावता सजा किने पूजायाका थनो॥ ॥ऊऊमानपतिम सिद्ध  
 लतिक॥ स्वानदिव्य॥ आगिर्वदिव्य॥ ॥थनविसर्जनयाक॥ वाक॥  
 जगयुजावा संभवेतजावा औपपाउकावा

कृत्वेवं सर्वमत्त्वानो॥ ॥थनकं गलनकं॥ धर्मकाहुडकिं सुखाहा॥ पंचरात्र  
 माहाउकिं सुखाहा॥ वेस्वानरद्वक्ताउकिं सुखाहा॥ सङ्गतिगमने॥ विकलपात  
 म्प्रक्षेपिगुहागंस्वधा॥ ॥पिङ्गुअय॥ वाक॥ सनियजप्रमानन पिङ्गुद्वेयाज  
 यामित्र उद्धविसफराडासां कर्मध्वनंशकं॥ ॥लामलनेलाहाकवायक॥ ॥  
 धूपकय॥ वस्त्रमहावस्त्र कृगतिमार्गविना भयसंगतिमार्ग धूपप्रदर्शय॥  
 दीपकय॥ ॥दीपप्रदर्शय॥ ॥पिङ्गुलूपसल्लेखनाथय॥ वाक॥ वदिका